लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

# जन एक्सप्रेस

वर्ष: 14 | अंक: 28 | मूल्य: ₹ 3.00/- पेज : 12 | लखनऊ, मंगलवार | 08 नवम्बर, 2022

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

## फास्ट फॉरवर्ड

# किसानों को सिंचाई की विधियों के बारे में बताया

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर कानपुर द्वारा सोमवार को जल शक्ति अभियान योजना के अंतर्गत एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आयोजन हुआ। केंद्र के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ.अजय कुमार सिंह ने किसानों को विभिन्न फसलों में सिंचाई की विधियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि भूगर्भ जल का 89 फीसदी भाग कृषि कार्य में प्रयोग किया जाता है, इसलिए वर्षा जल संचयन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रसार वैज्ञानिक डॉ. विनोद प्रकाश ने रबी फसलों में संतुलित उर्वरक प्रबंधन के बारे में बताया। डॉ. खलील खान ने बताया कि फसल अवशेषों को मल्च के रूप में प्रयोग करने पर कम सिंचाई की आवश्यकता होती है। गृह वैज्ञानिक डॉ. निमिषा अवस्थी ने बताया कि वर्षा जल संचयन करने पर फसलों की सिंचाई के लिए जल संरक्षित रहता है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मिथिलेश वर्मा ने किया। कार्यक्रम में रसूलाबाद एवं मैथा विकास खंडों के 50 से अधिक किसान मौजूद रहे।

दैनिक जागरण कानपुर

# घरों में लगाएं 13 प्रकार के पौधे, बाहर बनाएं पंचवटी

जासं, कानपुर: देश में हर वर्ष 650 मीट्रिक टन फसल अवशेष यानी पयार या पराली निकलती है। जहां इसे जलाया जाता है, वहां भूमि की नाइट्रोजन खत्म हो जाती है और हवा में प्रदूषण की मात्रा बढ़ जाती है। उद्योगों से निकलने वाला धुआं, उत्प्रवाह व वाहनों से निकलने वाली हानिकारक गैसें भी प्रदूषण का मुख्य स्रोत हैं। हम थोड़ी सी समझदारी से प्रदूषण पर लगाम लगाने में काफी हद तक कामयाब हो सकते हैं। इसके लिए जरूरी है कि उद्योगों के आसपास पंटवटी बनाएं व घरों में 13 प्रकार के पौधे लगाएं। यह जानकारी सोमवार को जागरण विमर्श कार्यक्रम में चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर की गृह विज्ञानी डा. निमिषा अवस्थी व मृदा विज्ञानी डा. खलील खान ने दी।

डा. अवस्थी ने बताया कि पंचवटी यानी पांच वृक्ष पीपल, बरगद, बेल, आंवला व अशोक प्रदूषण की रोकथाम में अहम भूमिका निभाते हैं। अगर उद्योगों के आसपास इन वृक्षों को लगाया जाए तो ये प्रदूषण को अवशोषित करके वायु को शुद्ध करेंगे। इसी तरह सभी लोगों को अपने घरों में तुलसी, एरेका पाम, एलोवेरा, रबर प्लांट, सर्पगंधा, स्पाइडर प्लांट, लेडी पाम, पीस लिली, मनी प्लांट, नीम, केला, फाइकस व क्रिसमस ट्री पौधों को जरूर लगाना चाहिए। यह सभी पौधे भी वायु को शोधित करते हैं। तुलसी, मनी प्लांट, एलोवेरा पौधों को तो बेडरूम में भी रखा जा सकता है।

डा. खलील खान ने बताया कि जब भूमि, वायु, जल में पाए जाने वाले तत्वों का संतुलन बिगड़ता है तो पर्यावरण प्रदूषित होने लगता है। इस असंतुलन का असर फसलों, पेड़, मनुष्य, जानवरों सभी पर पड़ता है। भूमि में 17 पोषक तत्वों की जरूरत होती है, लेकिन पराली जलाने, रसायनिक उर्वरकों के प्रयोग से पोषक तत्वों की मात्रा कम हो रही है। इसी वजह से सीएसए विश्वविद्यालय की ओर से किसानों को जागरूक करने के लिए अभियान चलाया जा रहा है। इसका असर भी दिख रहा है और अब तक सीएसए विश्वविद्यालय के अधीन किसी भी जिले में पराली जलाने की घटना सामने नहीं आई है। किसानों को पराली डीकंपोज करके भूमि में मिलाने की विधि बताई जा रही है।

जागरण विमर्श

समझदारी से प्रदूषण पर लगा सकते हैं लगाम ?

कार्यक्रम में संबोधित करते डा. खलील खान और डा. निमिषा अवस्थी ● जागरण

## मां का दूध भी हो रहा जहरीला

डा. निमिषा ने बताया कि शिशु के लिए मां का दूध सर्वोत्तम आहार होता है, लेकिन खेतीवाड़ी में रसायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के प्रयोग से मां का दूध भी जहरीला होता जा रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट से यह जानकारी सामने आई है। यही नहीं, आइसीएआर के एक शोध के मुताबिक गेहूं की फसल बोने के बाद अगर दुग्धावस्था के समय वायुमंडलीय तापमान में अगर एक डिग्री की भी वृद्धि होती है तो देश भर में साढ़े चार मिलियन टन अनाज की पैदावार कम हो सकती है। इसलिए पर्यावरण बचाने की जिम्मेदारी सभी की है।

# जल संरक्षण को लेकर कृषकों को दिया गया प्रशिक्षण

लोगों को जागरूक करते किसान व वैज्ञानिक।

कानपुर, 7 नवम्बर। कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर कानपुर की ओर से आज जल शक्ति अभियान योजना अंतर्गत एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। केंद्र के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने कृषकों को विभिन्न फसलों में सिंचाई की विधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी एवं जल संरक्षण विधि को लेकर उन्होंने महत्व के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि भूगर्भ जल का 89 प्रतिशथ भाग कृषि कार्य में प्रयोग किया जाता है। इसलिए वर्षा जल संचयन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रसार वैज्ञानिक डॉ विनोद प्रकाश में रबी फसलों में संतुलित उर्वरक प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ खलील खान ने बताया कि फसल अवशेषों को मल्च के रूप में प्रयोग किया जाए तो कम से कम सिंचाई की आवश्यकता होती है तथा किसानों की फसल लागत में कमी आती है। गृह वैज्ञानिक डॉक्टर निमिषा अवस्थी ने विभिन्न जल संरक्षण की विधियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने किसानों को विस्तार से बताया कि यदि वर्षा जल संचयन करेंगे तो निश्चित तौर पर हमें फसलों के लिए सिंचाई हेतु जल संरक्षित रहेगा। कार्यक्रम में किसानों का पंजीकरण गौरव शुक्ला एवं श्रीभगवान पाल ने किया। इस कार्यक्रम में रसूलाबाद एवं मैथा विकास खंडों के 50 से अधिक किसानों ने प्रतिभाग किया है।